प्रतीक्षा

बाधक ग्रहों का फलित सिद्धांत

'बाधक' का शाब्दिक अर्थ है 'बाधा या रूकावट देने वाला'। बाधक ग्रह कुंडली में बली या निर्बल, उच्च या नीच, मित्र या शत्रु–राशिस्थ आदि भिन्न–भिन्न स्थितियों में हो सकते हैं। तब क्या ऐसा तर्कसंगत है कि बाधक ग्रह की दशा–अन्तर्दशा आने पर फलित के अन्य अवयवों को अनदेखा करते हुए अशुभ फल कहा जाए?

इस लेख का उद्देश्य यही निर्धारित करना है कि बाधक ग्रह किन–किन परिस्थितियों में शुभ या अशुभ फल देते हैं।

1. साहित्यिक सन्दर्भ

वेंकटेश शर्मा विरचित सर्वार्थ चिंतामणि, अध्याय 18, श्लोक 2 के अनुसार :

क्रमाच्चरागद्विशरीरभानामुपान्त्यधर्मस्म रगास्तदीशाः।

खरेशमांदिस्थितराशिनाथा ह्यतीव बाधाकरखेचराः स्युः।।

चर, स्थिर और द्विस्वभाव लग्न में क्रमशः एकादश (उपान्त्य = द्वादश से पूर्व), नवम और सप्तम में स्थित ग्रह और उनके स्वामी बाधक ग्रह होते हैं। बाधकेश यदि 22 वें द्रेष्काण के स्वामी या मान्दि से युत हो तो अधिक बाधाकारक होता है।

वेंकटेश शर्मा जी के पुत्र वैद्यनाथ जी ने जातक पारिजात में उपरोक्त श्लोक को अध्याय 2 में श्लोक 49 के रूप में ज्यों–का–त्यों वर्णित किया है।

भावमंजरी अध्याय 3 श्लोक 12 के अनुसार :

चरस्थिरद्वंद्वभतः क्रमेणा यांकास्तगा वाथ तदीश्वरा ये।

जातित्रिभागाधिपमांदिभेशा बाधाकरास्ते विहगा अतीव।

इस श्लोक का अर्थ भी उपरोक्त जातक पारिजात वाला ही है। कुछ शब्दों में भिन्नता है, जैसे 22 वें द्रेष्काण के लिए सर्वार्थ चिंतामणि में खरेश का जबकि भावमंजरी में जातित्रिभागाधिपति का प्रयोग किया गया है।

जातक पारिजात, दशाफलाध्याय श्लोक 30 में बाधकेश सम्बन्धित दशाफल का निम्न वर्णन है :–

- बाधास्थानेश और उससे युत ग्रह की दशा–अन्तर्दशा शोक आदि रोग देती है।
- बाधास्थानेश और उससे युत ग्रह से केन्द्र की अन्तर्दशा में दुःख और विदेश भ्रमण होता है।
- दशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर 6–8 हों तो भय और देशत्याग होता है।
- यदि दशेश व अन्तर्दशेश में कोई एक शुभ हो तो मिश्रित फल होता है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र, चरादिदशाफलाध्याय, श्लोक 20–25 में चर दशा से सम्बन्धित सूत्र हैं जो हमारे विषय से भिन्न है।

फलदीपिका में बाधक ग्रह का वर्णन नहीं है।

अन्य प्रचलित मत

- कुछ ज्योतिषीय विद्वान बाधक को केवल किताबी मानते हैं।
- कुछ विद्वान मानते हैं कि बाधक ग्रह सिर्फ लग्न में स्थित होने पर ही अशुभ फलप्रद होता है।
- कुछ विद्वान मानते हैं कि बाधकेश यदि त्रिक भावेशों से युत हो या 22वें द्रेष्काण का स्वामी हो या इनसे दृष्ट हो, तो अपनी दशा–अन्तर्दशा में कष्ट देता है।
- कुछ विद्वान जोर देकर कहते हैं कि बाधक ग्रह के प्रभाव को प्रत्येक भाव से देखना चाहिए।

3. उदाहरण :

उदाहरण 1: जन्म तारीख 17–अगस्त–1973, 4.47 बजे, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

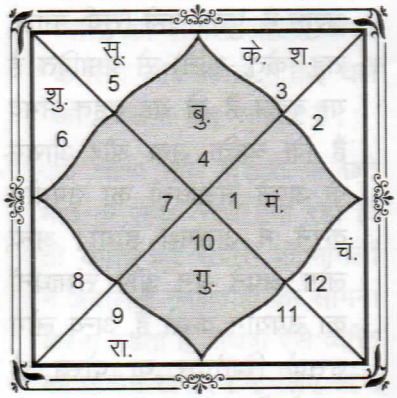

उपरोक्त कुंडली कर्क (चर) लग्न की है। एकादश भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है, इसीलिए एकादशेश शुक्र बाधकेश हुए। शुक्र तृतीयस्थ होकर नीच राशिस्थ भी हैं। खरेश बुध हैं।

मार्च–2015 में शुक्र की महादशा शुरू हुई। शुक्र–शुक्र में जातिका को स्वास्थ्य सम्बन्धित बाधाएं आईं। शुक्र–सूर्य में जातिका की माताजी का निधन हुआ। हालाँकि शुक्र के नैसर्गिक शुभ एवं नीचभंग (चन्द्र से केन्द्र) के कारण जातिका को शुभ फल भी मिले, जैसे जातिका का रुझान दूर–संचार और लेखन क्षेत्र में बढ़ा।

उदाहरण 2 : जन्म तारीख 15–जनवरी–1970, 2.40 बजे, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

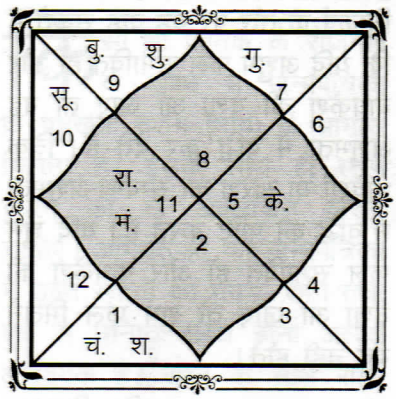

उपरोक्त कुंडली वृश्चिक (स्थिर) लग्न की है। नवम भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है, इसीलिए नवमेश चन्द्र बाधकेश हुए। नवमेश चन्द्र रोग भावस्थ हैं और नीचस्थ शनि से युत हैं। खरेश मंगल हैं।

जुलाई 2000 में चन्द्र की महादशा शुरू हुई। जातक को इस दशा के दौरान अत्यधिक स्वास्थ्य कष्ट (दिल का दौरा भी पड़ा) और मानसिक पीड़ा हुई।

उदाहरण 3 : जन्म तारीख 1–जुलाई–1994, 7.15 बजे, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश।

उपरोक्त कुंडली में कर्क (चर) लग्न है और एकादश भाव में मंगल स्थित हैं और एकादशेश शुक्र हैं। इसीलिए

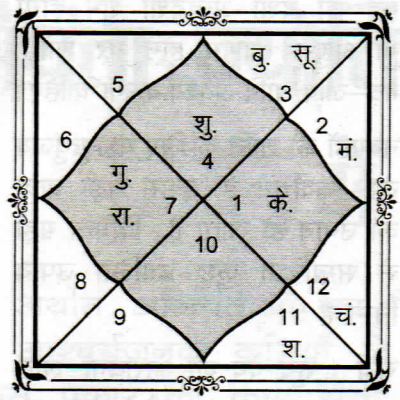

मंगल और शुक्र बाधक हैं। शुक्र शत्रु राशिस्थ हैं। खरेश शनि हैं। शुक्र और शनि दोनों ही भावेश के रूप में अशुभ हैं और परस्पर 6–8 हैं।

अक्टूबर 2018 में शुक्र/शुक्र/शनि की दशा आते ही जातक ने पैसों के लालच में किसी की हत्या कर दी और उसे जेल हुई।

उदाहरण 4 : जन्म तारीख 9–अप्रैल–1981, 11.55 बजे, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

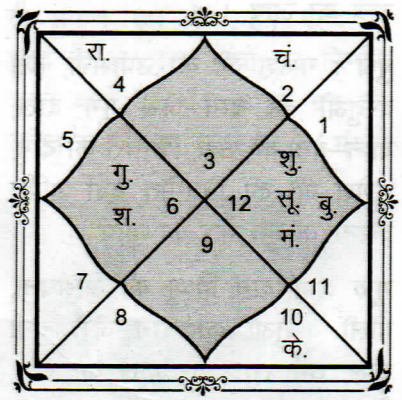

उपरोक्त कुंडली में मिथुन (द्विस्वभाव) लग्न है। सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसीलिए सप्तमेश गुरु बाधकेश हुए। खरेश बुध हैं। गुरु का सम्बन्ध त्रिक भावेशों के साथ–साथ खरेश से भी है।

गुरु/केतु, अगस्त 2011 में विवाह हुआ, परन्तु बहुत मानसिक कष्ट मिले और बाद में गुरु–शुक्र, 2013 में तलाक भी हो गया। गुरु/बुध में नौकरी से सम्बन्धित बाधाएं भी आ रही है।

उदाहरण 5 : जन्म तारीख 5–जुलाई–1945, 07.31 बजे, बरेली, उत्तर प्रदेश।

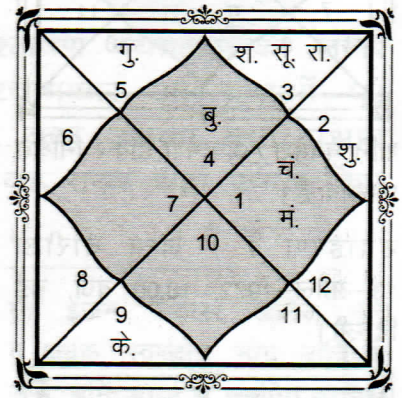

उपरोक्त कुंडली में कर्क (चर) लग्न है। एकादश भाव में एकादशेश शुक्र स्थित हैं। अतः इस कुंडली के लिए शुक्र बाधकेश हुए जो एकादश में ही स्वराशिस्थ हैं।

जातक एक इंजीनियर है जिसे चन्द्र/शुक्र में नौकरी मिली। चन्द्र लग्नेश हैं। जातक को मंगल/शुक्र में प्रथम पुत्री संतान की प्राप्ति हुई। मंगल दशम में स्वराशिस्थ हैं। शुक्र की अन्तर्दशा जातक के लिए सदैव लाभप्रद ही रही।

उदाहरण 6 : जन्म तारीख 7–अक्टूबर–1960, 23.15 बजे, पटियाला, पंजाब।

उपरोक्त कुंडली में मिथुन (द्विस्वभाव) लग्न है। सप्तम भाव में गुरु एवं शनि हैं और सप्तमेश भी गुरु हैं। अतः इस कुंडली के लिए गुरु और शनि बाधकेश हुए। खरेश शुक्र हैं।

जातक की बुध/गुरु अच्छी गई और जातक ने इस दशा में अपना मकान बनाया। गुरु स्वराशिस्थ हैं और

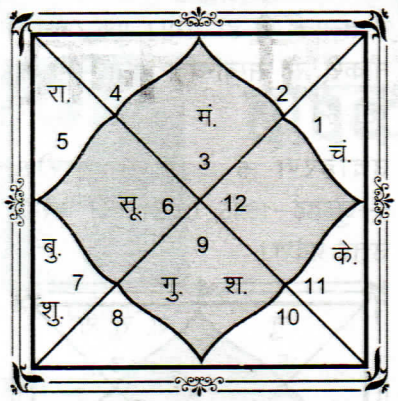

शनि नवमेश/अष्टमेश होकर मिश्रित फलप्रद हैं।

उदाहरण 7 : जन्म तारीख 13–अप्रैल–1972, 10.00 बजे, नई दिल्ली।

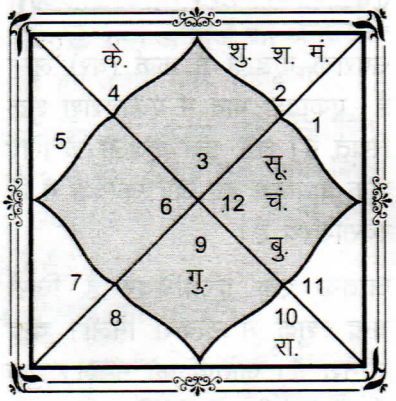

उपरोक्त कुंडली में मिथुन (द्विस्वभाव) लग्न है। सप्तम भाव में गुरु हैं और सप्तमेश भी गुरु हैं। अतः इस कुंडली के लिए गुरु बाधकेश हुए। खरेश शनि हैं।

इस समय चन्द्र की महादशा, राहु की अन्तर्दशा और बाधकेश गुरु की प्रत्यन्तर दशा है। इसमें सप्तम भाव से संबंधित कष्ट (पत्नी का देहांत) मिला, परन्तु ज्योतिष के क्षेत्र में मान–सम्मान मिला और आय बढ़ी।

4. उपाय

सर्वप्रथम कुंडली का आकलन करने के पश्चात् यह ज्ञात करें कि बाधक ग्रह की दशा–अन्तर्दशा शुभ होगी या अशुभ। अशुभ होने पर शांति, मंत्र–जाप आदि अवश्य करना चाहिए।

नवग्रहों की शांति के लिए महामृत्युंजय जाप सर्वोत्तम है, इससे बड़ी बाधा का उपाय हो जाता है। विभिन्न ग्रहों से सम्बन्धित कुछ प्रचलित उपाय निम्न हैं :

सूर्य : सूर्य देव की आराधना, लाल वस्तुएं दान करना– जैसे गेहूं, गुड़ आदि, सूर्य देव को प्रतिदिन जल में रोली एवं लाल फूल डाल कर अर्घ्य देना, आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ या सूर्य मंत्र का जाप।

चन्द्र : शिव आराधना, सफेद वस्तुओं का दान, शिव जी का प्रतिदिन दुग्धाभिषेक या चन्द्र मंत्र का जाप।

मंगल : हनुमान जी की आराधना, मंगल ग्रह सम्बन्धित वस्तुओं का दान–जैसे मसूर दाल आदि या मंगल मन्त्र का जाप ।

बुध : गणेश जी की उपासना, हरी वस्तुओं का दान–जैसे मूंग दाल, बहन–बेटी की सेवा, किन्नरों को दान, गणेश जी को नियमित दूर्वा अर्पित करना या बुध मंत्र का जाप।

गुरु : भगवान विष्णु की आराधना, पीली वस्तुओं का दान–जैसे चना दाल, धर्म स्थल पर केले का दान, विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पाठ या गुरु मंत्र जाप।

शुक्र : लक्ष्मी जी की आराधना, शुक्रवार को कन्याओं को मीठी वस्तुओं का दान– जैसे खीर आदि या शुक्र मंत्र का जाप।

शनि : शिव जी की आराधना, पीपल वृक्ष की पूजा, काले तिल और सरसों तेल शनि देव को अर्पण करना, नौकरों आदि को भोजन या शनि मंत्र का जाप।

राह/केतु : बाधक भाव में यदि राहु/केतु स्थित हों तो राहु के लिए उड़द दाल का ज्यादा उम्र के पुरुष, अपाहिज भिखारी को दान, शीत काल में सोते हुए भिखारी को भूरे रंग का कंबल दें। केतु के लिए धर्म स्थल पर सेवा, मन्दिर में ध्वज फहराना, काले कुत्ते की सेवा आदि।

5. निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर यह कह सकते हैं कि यदि अशुभ फल संभावित हों और बाधकेश की दशा आ जाए तो वह अशुभता में वृद्धि कर देते हैं। त्रिक भावेशों या खरेश का सम्बन्ध अशुभता में वृद्धि की पुष्टि करते हैं। यदि शुभ फल संभावित हों और बाधकेश की दशा आ जाए तो शुभ फल मिलने बंद नहीं होते।

पता : 1187/9ए2 शक्ति तिराहा
जै प्रकाश नगर, अधरतल, जबलपुर
(मध्य प्रदेश)–482004
मो. 9993331069

राजेश्वर दाती जी महाराज

वशीकरण, ऊपरी बाधा, काम बंधन खोलना, पितृ दोष, कालसर्प दोष शांति, ग्रह बाधा शांति, तांत्रिक अनुष्ठान, जाप, हवन तथा कर्मकांड एवं महामृत्युंजय एवं गायत्री जाप के लिए संपर्क करें।

फोन : 9212120817, ए–32–ए, जवाहर पार्क, देवली रोड, नयी दिल्ली–62